Kartik Purnima Vrat Katha in Hindi:- एक समय की बात है राक्षस ताड़कासुर के तीन पुत्र थे। तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्‍माली तीनो ही बड़े पराक्रमी व मायावी और वीर थे। एक दिन भगवान शिवजी के बड़े पुत्र कार्तिकेय जी ने ताड़कासुर का वध करके तीनो लोको को मुक्‍त कराया। अपने पिता के कातिल से बदला लेने के लिए ताड़कासुर राक्षस के तीनों पुत्रों ने ब्रह्माजी की घोर तपस्‍या की। उनकी इस तपस्‍या से प्रसन्‍न होकर ब्रह्मा जी बोले मांगो दैत्‍यराज पुत्रों क्‍या मांगते हो। ताड़़कासुन के पुत्रों ने अमर होने का वरदान मांगा और कहा की हमे इस संसार में कोई नही हरा सके। किन्‍तु ब्रह्मा जी ने कहा की तुम तीने इस वरदान के अलावा कोई दूसरा वरदान मांगो।

मैं ये वरदान तुम्‍हे नही दे सकता वो इसलिए की इस धरती पर जो जन्‍म लेता है वह अवश्‍य मृत्‍यु को प्राप्‍त होता है क्‍योंकि केवल मृत्‍यु ही सदाचारी है जिसके बाद राक्षक के तीनो पुत्रो ने कहा ही हे ब्रह्मदेव यदी आप हमे अमर होने का वरदान नही दे सकते तो ठीक है। आप हम तीनो के लिए तीन नगर बनवाएं और जो हमारा वध करना चाहता है उसके हम हजार वर्ष बाद मिले। उससे पहले नही। और जब हम मिले तो हमे एक ही तीर से मार गिराऐ ऐसा वरदान दिजिऐ। ब्रह्मा जी ने तीनो राक्षक पुत्रो को तथास्‍तु कहते हुए अंतर्रध्‍यान हो गऐ। इसके बाद उन तीनो राक्षसो ने मिलकर तीनो लोको पर अपना आधिपत्‍य जमा लिया क्‍योकि ब्रह्मा जी के वरदान अनुसर उन्‍हे मारने वाले हजार वर्ष बाद आऐगा।

जिसके बाद सभी देवगण मिलकर भगवन शिवजी के पास गऐ और इस समस्‍या का सामाधान ढूढने को कहा। देवताओ की बात सुनकर भगवान शंकर जी ने विश्‍वकर्मा से कहकर एक भव्‍य रथ का निर्माण करवाया। और उस रथ में बैठकर तीनो दैत्‍यो का संहार करने को चल दिऐ। य‍ह देख सभी राक्षस घबरा गऐ। और हाकार मचाने लगे। दानवों व देवों में भीषण युद्ध छिड़ गया युद्ध के समय जब ताड़कासुन के तीनो पुत्र एक साथ आऐ तो भगवान शंकर ने उन्‍हे एक ही तीर में मार गिराया। और तीनो लोकाे को राक्षसो से मुक्‍त कराया।

जिसके बाद सभी देवो ने भगवान शंकर को त्रिपुरारी नाम दिया। इसी विजय की खुशी में सभी देवता मिलकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन धरती पर आऐ। और काशी में देव दिवाली मनाई तभी से लेकर आज तक प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा (Kartik Purnima) के दिन देव दिवाली (Dev Diwali) बड़ी धूम धाम से मनाई जाती है।

दोस्‍तो आज के इस लेख में हमने आपको कार्तिक पूर्णिमा Kartik Purnima Vrat katha in Hindi के बारे में विस्‍तार से बताया है। यह जानकारी आपको केवल पौराणिक मान्‍यताओं व कथाओं के आधार पर बताई है। Onlineseekhe.com इसकी पुष्‍टि नहीं करता है यदि हमारे द्वारा बताई हुई जानकारी पसंद आई हो तो लाईक करे व अपने दोस्‍तो के पास शेयर करे। और यदि आपके मन में किसी प्रकार का प्रश्‍न है तो कमेंट करके जरूर पूछे। धन्‍यवाद